International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 19-05-2024, Accepted: 07-06-2024, Published: 30-06-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 40-41

छत्तीसगढ़ में पर्यटन की चुनौतियां एवं उपाय

डॉ. पुष्पा देवांगन[1], डॉ. बलभद्र प्रसाद देवांगन[2]
[1] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, के. पी. महाविद्यालय, बंधापाली सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राचार्य एवं विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र विभाग, अशोका महाविद्यालय, उम्मेदपुर, सारंगढ़, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
छत्तीसगढ़ राज्य 1 नवंबर 2000 को अस्तित्व में आया। यह 26 वां राज्य है, जिसकी पृष्ठभूमि न केवल राजनीतिक कारणों से है, वरन् प्राकृतिक संपदा, सांस्कृतिक चेतना, ऐतिहासिक एवं पौराणिक कारणों से भी है। इतिहास में छत्तीसगढ़ की पहचान महाकांतर, दण्डकारण्य, दक्षिण कौशल एवं महाकौशल के रूप में रही है। प्रारंभ से लेकर अब तक यह पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है। पर्यटन की दृष्टि से इसका अपना महत्व होने के साथ ही इसके माध्यम से राज्य को अतिरिक्त आर्थिक आमदनी हो सकती है, यह बात और है कि यह काम चुनौती भरा है, असंभव नहीं।

मुख्य शब्दः रक्षा उत्पाद, रक्षा निर्यात, स्वदेशी, मेक इन इंडिया, नवाचार प्रौद्यौगिकी, आत्मनिर्भरता

संसदीय प्रक्रिया रूपी प्रसवकाल के बाद 1 नवंबर 2000 को सर्पाकार स्वरूप में 26वें राज्य के रूप में जन्मे छत्तीसगढ़ राज्य की पृष्ठ भूमि एतिहासिक, पौराणिक एवं जिज्ञासापूर्ण है। इतिहास में छत्तीसगढ़ की पहचान महाकांतर, दण्डकारण्य, दक्षिण कौशल एवं महाकौशल के रूप में थी। प्राकृतिक सम्पदा, सांस्कृतिक चेतना एवं आर्य अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल के रूप में यह क्षेत्र प्राचीन समय से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है। 36 गढ़ी के आधार पर इस अंचल का नामकरण छत्तीसगढ़ हुआ है। छत्तीसगढ़ का पूर्व से पश्चिम तक विस्तार 360 किमी है। छत्तीसगढ़ का मैदान 80 किमी. लम्बा 322 कि.मी. चौड़ा है तथा इसका क्षेत्रफल 31600 वर्ग कि.मी. है।

किसी भी स्थान की सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास से परिचित होने का सरल एवं सशक्त माध्यम पर्यटन को माना जाता है। छत्तीसगढ़ के पर्यटक स्थल एतिहासिक, पुरातात्विक, पौराणिक, धार्मिक, औद्योगिक, प्राकृतिक सौंदर्य के आधार पर अद्वितीय है। धार्मिक आधार पर महानदी, पैरी व सोंदूर नदियों के संगम पर स्थित छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम, वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक बल्लभाचार्य जो कि जन्म स्थली चम्पारण्य, डोंगरगढ़, दंतेश्वरी, गिरोधपुरी एवं शिवरीनारायण आदि श्रद्धालुओं के केन्द्र बिन्दु है। युवा वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करने में चित्रकूट, तीरथगढ़ एवं राम झरना के जलप्रपात, बरसूर का प्राकृतिक सौंदर्य, कोटमसर की प्राकृतिक गुफाएं, सतपुड़ा की सुरम्य पहाड़ियों में स्थित मैनपाट, छत्तीसगढ़ का खजुराहो भोरमदेव छोटा भारत के रूप में विख्यात औद्योगिक नगरी भिलाई समर्थ है। प्रकृति प्रेमियों को बारनवापारा, बस्तर एवं सिहावा का वन क्षेत्र, राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य प्रकृति के निकट लाते हैं। इस अंचल में भिलाई का चिड़ियाघर, रायपुर के निकट नंदनवन, धमतरी के निकट गंगरेट बांध आदि बच्चों को पर्यटन हेतु प्रेरित करते हैं।

1996–97 की तुलना में छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना नवंबर 2000 के बाद वर्ष 2003–04 में पर्यटकों की संख्या जहां 23.03 प्रतिशत बढ़ी वहीं विदेशी मुद्रा के रूप में होने वाली आय 37.07 प्रतिशत बढ़ी/आर्थिक विकास के अन्य क्षेत्र की तुलना में पर्यटन जगत की विकास की दर अपेक्षाकृत कम है।

छत्तीसगढ़ पर्यटन एवं चुनौतियांः

पर्यटन सम्पदा की दृष्टिकोण से संपन्न छत्तीसगढ़ राज्य की पर्यटन गतिविधियां के सम्मुख चुनौतियां इस प्रकार है–

- **पर्यटक स्थलों का प्रचार नहींः** छत्तीसगढ़ के पर्यटक स्थलों एवं उनके मुख्याकर्षणों के प्रचार प्रसार के लिए प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर कोई प्रबंध नहीं है।
- **रेल एवं सड़क व्यवस्था अपर्याप्तः** पर्यटन रूपी भारीर की नाड़ी सड़क एवं रेल व्यवस्थाएं होती है जिसमें पर्यटक रूपी रक्त गमन करते हैं किन्तु दुर्भाग्यवश इस अंचल में सड़क एवं रेल व्यवस्था न केवल अपर्याप्त है बल्कि गुणवत्ताविहिन भी है।
- **यातायात सुविधाओं की कमीः** पर्यटकों को पर्यटन केन्द्रों से जोड़ने वाली कड़ी का नाम यातायात सुविधाएं है किन्तु छत्तीसगढ़ में पर्यटन की दृष्टि से यातायात सुविधा न केवल अपर्याप्त है बल्कि श्रेष्ठता के मापदण्डों के अनुसार भी नहीं है।
- **रेस्तरां सुविधा नहींः** पर्यटक, पर्यटन केन्द्रों में अच्छी नाशता एवं भोजन की सुविधा चाहते हैं किन्तु, पर्यटन केन्द्रों में रेस्तरां सुविधा न केवल अपर्याप्त है वरन गुणवत्ता के आधार पर उपयुक्त भी नहीं है।
- **ठहरने की असुविधाः** पर्यटक यदि पर्यटन केन्द्रों में रूककर अधिक दिनों तक पर्यटन का आनंद लेना चाहे तो इसके लिए ठहरने की उत्तम व्यवस्था का होना नितांत आवश्यक है किन्तु यह सुविधा भी पर्याप्त एवं अच्छे स्तर की नही है।
- **पर्यटक गाइडों की कमीः** विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर पर्यटन शिक्षा का अभाव होने के कारण पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी देने वाले पर्यटक गाइडों की कमी भी इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण समस्या है।
- **महात्सवों की कमीः** देश के अलग–अलग अंचलों में जिस तरह समय–समय पर महोत्सवों का आयोजन कर पर्यटकों को आकर्षित किया जाता है उस तरह का आयोजन इस अंचल में नहीं हो पा रहा है।

- **पर्यटक स्थलों के प्रति चौकस नहीं:** पर्यटक स्थल किसी भी स्थान की सम्पदा होते हैं जिनकी सुरक्षा व्यवस्था अच्छी होनी चाहिए किन्तु दुर्भाग्यवश यह कमजोरी भी इस क्षेत्र के पर्यटन क्षेत्रों में पाई जाती है।

- **स्थानीय कागीरों को प्रोत्साहन नहीं:** इस अंचल में कारीगरों की कमी नहीं है किन्तु इन्हे पर्याप्त सुविधाएं एवं प्रोत्साहन न मिलने के कारण इस अंचल की कला पर्यटकों को प्राप्त नहीं हो पाती।

पर्यटन केन्द्रों को आकर्षित एवं सुविधायुक्त बनाने के उपाय

पर्यटन रोजगार के अवसर पैदा करने वाला, गरीबी दूर करने वाला, देश की सांस्कृतिक एवं साहित्यक धरोधर का प्रचार करने वाला एवं मानव संसाधन का सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठतम उपयोग करने वाली मानवीय क्रिया है। छत्तीसगढ़ पर्यटन केन्दों को आकर्षित एवं सुविधायुक्त बनाने के निम्न उपाय–

- **प्रचार एवं प्रसार की व्यवस्था:** आज का युग विज्ञापन का युग है अतः प्रांतीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर छत्तीसगढ़ के मुख्य पर्यटन केन्द्रों के मुख्याकर्षणों की जानकारी देने का प्रबंध करना होगा।

- **पर्याप्त यातायात व्यवस्था:** पर्यटकगण पर्यटन क्षेत्रों में आसानी से पहुंच सके इसके लिए सड़क, रेल एवं वायु मार्ग की उचित व्यवस्था करनी होगी तथा यातायात के साधन उपलब्ध कराने होंगे।

- **आधारभूत पर्यटन सुविधा का निर्माण:** पर्यटन केन्द्रों में रेस्तरां, होटल, बाग बगीचे, मनोरंजन केन्द्रों, भाापिंग सेंटरों का निर्माण किया जाना चाहिए तथा इसके लिए निजी क्षेत्रों का भी सहयोग लिया जा सकता है।

- **एक छत के नीचे सुविधा:** भाहरों में एक छत के नीचे पर्यटन की जानकारी एवं पर्यटन संबंधी सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए ताकि पर्यटक सुरक्षितभाव से पर्यटन का आनंद ले सके।

- **करमुक्त हस्त सामग्री का विक्रय:** छत्तीसगढ़ में हस्त कलाओं की कोई कमी नहीं है अतः भाासन को यह प्रयास करना चाहिए कि कलाकारों को न केवल कच्ची सामग्री उपलब्ध कराई जाए वरन साथ ही विपणन सुविधा, प्रचार सुविधा भी प्रदान की जाए। यदि पर्यटक स्थलों को कर मुक्त विक्रय की सुविधा प्रदान की जाए तो पर्यटकों को पर्यटन के साथ अच्छी हस्तकला की वस्तु कम मूल्य पर उपलब्ध हो पायेगी।

- **महोत्सवों का आयोजन:** देश के विभिन्न भागों जैसे दिल्ली, श्रीनगर, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर एवं उज्जैन में महोत्सवों का आयोजन कर जिस तरह पर्यटकों को आकर्षित किया जाता है इसी तरह इस अंचल में भी महोत्सवों का आयोजन डोंगरगढ़, राजिम, भिलाई, दंतेश्वरी आदि स्थलों में किया जा सकता है।

- **पर्यटन प्रेरित उद्योग नीति:** राज्य की उद्योग नीति का स्वरूप इस प्रकार का होना चाहिए कि पर्यटन गतिविधियों को सहारा एवं बढ़ावा मिल सके।

- **पर्यटन शिक्षा का प्रचार:** विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एवं विद्यालय स्तरों के पाठ्यक्रम में पर्यटकों को भाामिल करना चाहिए ताकि सामान्य जन में पर्यटन के प्रति आकर्षण बने तथा पर्यटन गाइड के रूप में लोगों को रोजगार उपलब्ध हो सके।

- **अशोक इंस्टीट्यूट आफ हॉस्पिटेलेटी एण्ड दूरिज्म मैनेजमेंट की इकाई:** भारतीय पर्यटन विकास निगम की यह इकाई पर्यटन एवं स्वागत प्रबंधन के क्षेत्र में शिक्षा देने का कार्य करती है। इस संस्थान का सहयोग प्राप्त कर इस क्षेत्र में पर्यटन को प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

- **भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान:** पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन की शिक्षा देने तथा पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा देने के लिए इस संस्थान की स्थापना ग्वालियर में की गई है। छत्तीसगढ़ भाासन इस संस्थान का सहयोग भी प्राप्त कर सकती है।

- **राष्ट्रीय जल क्रीडा संस्थान गोवा:** जल क्रीडा सुविधा के कारण गोवा अंतर्राष्ट्रीय स्तर का पर्यटक स्थल है, यदि वहां की इस अनुभवी संस्थान का सहयोग लिया जाये तो नदी किनारे वाले क्षेत्रों में नौकायान, गोताखोरी जल बहाव पर फिसलने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है। यह सुविधा पर्यटकों को आकर्षित क सकती है।

अन्य उपाय

1. छत्तीसगढ़ में पर्यटन स्थल में हेरिटेज होटलों का विकास एवं विस्तार।
2. पर्यटन संबंधी मंत्रालयों में समन्वय।
3. पर्यटन को उद्योग का दर्जा।
4. धरोहर आधारित पर्यटन को बढ़ावा आदि उपायों का सहारा पर्यटन केन्द्रों को आकर्षित एवं सुविधाजनक बनाने के लिए लिया जा सकता है।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ में पर्यटक स्थलों का विकास एवं विस्तार इस प्रकार करना चाहिए ताकि पर्यटकगण स्वयं को भौतिक रूप से रोमांचित, मानसिक रूप से तरोताजा, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, आध्यात्मिक स्तर पर उन्नत तथा प्रदेश को अंतर्तम में महसूस कर सके और यह कोई न कह सके कि छत्तीसगढ़ पर्यटन सम्पदा के आधार पर अमीर राज्य है किन्तु पर्यटकों की संख्या के आधार पर गरीब राज्य है।

संदर्भ सूची

1. भारत 2006 अंजनी भूषण प्रकाश विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2006।
2. छत्तीसगढ़ रोड एटलस प्रयाग जैन, हिमाली जैन, डी डी ए फ्लैटस झिलमिल कालोनी दिल्ली।
3. छत्तीसगढ़ी संस्कृति एवं विभूतियां डॉ. रामकुमार बेटार, छत्तीसगढ़ भाोध संस्थान 2003।
4. छत्तीसगढ़ का इतिहास भगवान सिंह वर्मा, म.प्र. हिन्द ग्रंथ अकादमी 2001।
5. छत्तीसगढ़ का राजनैतिक इतिहास डॉ. अरविंद भार्मा अरपा बुक डिपो 1999।
6. प्रतियोगिता दर्पण (भारतीय अर्थ व्यवस्था) उपकार प्रकाशन 2005।
7. भारत 2001 अंजनी भूषण प्रकाश विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 2001।
8. प्रतियोगिता किरण।
9. भाोध पत्रिका रिसर्च लिंक, भाव्या छत्तीसगढ़ विवके, भाोध उपक्रम के अंक।